राधास्वामी संत संदेश

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 7 अंक : 81 15 जनवरी 2004

सदस्यता शुल्क : ——————— भारत, नेपाल व सिक्किम में

वार्षिक : रुपए 40/- एक प्रतिः रुपए 5/-

इस अंक में

1. बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग 2
2. ध्यानाकर्षण बिन्दू 22
3. अहंकार (महर्षि शिवव्रत लाल जी) 23
4. अनमोल वचन 25
5. ज्ञान-सार 25
6. स्वास्थ्य स्तम्भ (औषधि प्रयोग) 26
7. सत्संग सार 27
8. सतगुरु कृपा 29
9. बुद्धिमान बंजारा (कहानी) 31

राजीव कुमार लोहिया, मुद्रक एवं प्रकाशक द्वारा अपने स्वामित्व में राधास्वामी सत्संग प्रेस हालू बाजार, भिवानी से मुद्रित तथा कार्यालय, हालू बाजार, भिवानी से प्रकाशित

फोन नं. : 01664-241570 (भिवानी आश्रम)
01664-285094 (दिनोद आश्रम)

वेबसाइटः- www.radhaswamidinod.org

इ-मेलः- info@radhaswamidinod.org

बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग

भिवानी कैसेट क्रमांक..... 90

दिनांक 5.9.92

समय .....दोपहर

राधास्वामी! राधास्वामी दयाल की दया!!

राधास्वामी सहाय!!! राधास्वामी!

प्रेमियो, सत्संगियो, माताओ और बहनों! जब इंसान भजन सुमरन में बैठता है, उस वक्त मालिक से डोर लग जाती है। फिर उसके वश की बात भी नहीं रहती। मैं लिखना नहीं जानता था पर जब बोला करता था तो कई लिखने वाले लिख लिया करते थे। एक बार महाराज जी ने कहा कि दोहे, चौपाई लिखने की आगे कोई जरूरत नहीं है मुझे बहुत ख्याल हुआ कि क्यों रोक दिया? पर संत को कौन समझ सकता है—

संत की गति गोई, दादू जाने न कोई।

संतों की बात को तो संत ही जानते हैं। अगर दूसरा कोई बुद्धि लड़ाता है तो यह उसकी गलती है। मैं कुछ भी नहीं बोला। मुझे तो अपने सतगुरू का वचन मानना था। कुछ दिन के बाद यह बात खुद ही मेरी समझ में आ गई कि यह बिल्कुल ठीक कही है। सतगुरू इसीलिए रोक लगा गए कि अब आगे क्या लिखेगा? लिखने के लिए जगह ही नहीं रही। अगर कोई कहे कि मैं राधास्वामी धाम में पहुंच गया तो उससे आगे कहां जाएगा? आगे तो कोई जगह नहीं रही फिर वह कहां पहुंचेगा? सो यह बात मेरी समझ में आ गई कि महाराज जी ने जो बात कही वह सोलह आने ठीक थी। वह क्या लिखा था? उस वक्त कमल भेद लिखा था। आप लोग तो उन्हें रोज पढ़ते हो। वे बातें किसी के समझ में नहीं आती।

मेरे पास एक सत्संगी पुस्तक लेकर आया। कहा—वाह जी वाह ! आपने एक बात गजब की कर दी। मैंने ब्रह्मवेदी भी पढ़ी है। कबीर साहब का शब्द—"कर नैनों दीदार" भी पढ़ा है। एक ही बात है। महाराज स्वामी परमानंद जी रिवाड़ी वालों का ''शब्द'' ''सातों रंग निरखता जा'' भी पढ़ा है। स्वामी जी का ''हिदायतनामा'' भी पढ़ा है और घीसा साहब का शब्द भी पढ़ा है। यह तो सभी कहते हैं कि अठारह चक्कर हैं। अठारह पैड़ी या अठारह मंजिल हैं। अठारह स्थान हैं पर इन्होंने परदा रख दिया है। आपने इन सभी अठारह का पूरा निर्णय कर दिया है। पर ये सत्संगियो, अभ्यासियों के काम की ही बातें हैं। दूसरों के काम की नहीं। दूसरों के लिए तो वे जहर हैं। इसी तरह यदि अभ्यास नहीं किया और उस वाणी को सीख लिया तो मर जाएगा। किस तरह मरेगा? अब यही बात आ जाती है—**सतगुरू पूरा खोज काल से बचना चाहे तो।** सतगुरू किसे कहते हैं? क्या मुझे सतगुरू कहते हैं? नहीं। यही हमारी भूल है। हम सतगुरू को पहचान नहीं सकते। मैं ये बातें जरूर कहूंगा कि देह धारी का भी शरणा लेना पड़ता है। पर देहधारी गुरू किसको कहते हैं? देहधारी गुरू नहीं, सतगुरू हो तो तार देता है। शब्द भी यही है—

सतगुरू पूरा खोज काल से बचना चाहवै री।

सतगुरू तो खोज लिया। अच्छा हट्टा—कट्टा और जवान है। अच्छी जायदाद है। बेटे पोते हैं। बड़े—बड़े डेरे हैं। विद्वान भी है। सोचो! मैं क्या कहता हूं? दुनिया उसका आदर भी करती है पर वह शब्द बिहुना है। यदि शब्द को ही नहीं समझता तो वह तुमको पार नहीं उतारेगा। मैं तो सतगुरू शब्द को मानता हूं। पर मेरे ऊपर भी उंगली उठाई जा सकती है कि आप उन अरमान साहब के गीत क्यों गाते हो? मैं बिल्कुल ठीक गाता हूं क्योंकि वे शब्द स्वरूपी थे। शब्द भेदी थे। उस सतगुरू को ही खोजो जो 10

प्रकार के शब्दों का वाकिफकार हो। अगर एक ही शब्द का भेदी है, तो सतगुरू नहीं मिला है। दो को जानता है तो भी नहीं मिला। तीन और नौ तक भी शब्द जानता है तो भी तुम्हें सतगुरू नहीं मिला। यही कबीर साहब की वाणी आती है। जो मनु जी की थी या किसी और की। उसमें भी यही लिखा है—शिवजी महाराज पार्वती को समझाता है कि हे पार्वती ! सवेरे ब्रह्म मुहूर्त में उठकर जो इस शब्द का साधन करता है वह अपने घर चला जाएगा। इस शब्द में से ही नौ शब्द निकलते हैं। यह दसवां शब्द है। आप फिर कह दोगे कि आप उनका खंडन भी करते हो। नहीं। मैं खण्डन मजहबों का नहीं, उनके गुरूओं का कर देता हूं। क्यों? क्योंकि यह मेरे वश की बात नहीं है। वे तो धर्म के ठेकेदार बन जाते हैं। गुरू भी बन जाते हैं पर उनसे पूछ लिया जाए कि कौन सा शब्द कौन सी मंजिल का है तो वे बता नहीं पाते। जब उन्होंने इन शब्दों का ही भेद नहीं बताया तो वह गुरू कहलाने के ही काबिल नहीं हैं। वे क्या गुरू बने? मैं आप लोगों को नर्क में ले जाने की बातें नहीं करता। मैं आप लोगों को निज घर पहुंचाने की बातें करता हूं। कई लोग ऐसी घटियापन की बातें कह देते हैं। ये उनकी गलतियां हैं। तो मैं आपको शब्द के बारे में बता रहा था—

सतगुरू पूरा खोज सखी, काल से बचना चाहवै री।

सो उस शब्द स्वरूपी पूरे सतगुरू को खोजो। उस शब्द की तलाश करो जो सारी दुनिया की जान है। उस शब्द की धारा निकलती है। जब वह धारा राधास्वामी धाम से चलती है तो उस धारा में से दो धाराएं बन जाती हैं। आप इस प्रकार समझो। पेड़ पैदा हुआ और थोड़ा ऊपर जाकर उसकी दो शाखाएं हो गई। इसी तरह से जब वह धारा राधास्वामी धाम से चलती है, तो उसमें से दो शाखाएं हो जाती हैं। वे दो शाखाएं कौन सी हैं? वे हैं ज्योति व निरंजन की। मैं शब्द की, सतगुरू की बातें कहता हूं। जो

इस सतगुरू को समझ जाएगा उसका जन्म—मरण मिट जाएगा। ये मेरी बातें नहीं हैं। अगर इन बातों में कोई कमी आई तो हजूर महाराज शिवव्रतलाल जी को बट्टा लगेगा। अरमान साहब, पं० फकीर चन्द जी, बाबा सावण सिंह जी को बट्टा लगेगा। क्योंकि बाबा सांवण सिंह जी की भी यही राय थी कि राम सिंह, सत्संग करते रहना। तेरी मदद करने वाली ताकत आएगी। फिर उन्होंने ये बातें क्यों कहीं?

फकीर चंद जी ने भी मुझसे कहा था—बेटा बे परवाह होकर बातें करना। मैं तेरी मदद करता रहूंगा। मेरा हाथ तेरी पीठ पर रहेगा। यही बात मैं उन संतों की कहता हूं। महर्षि शिवव्रत लाल जी ने भी महाराज जी से कहा था कि तेरी मदद करने के लिए मेरी ताकत आएगी। मुझे उस ताकत का तो पता नहीं पर मैं बताता हूं कि जब तक सतगुरू नहीं मिलेगा, तब तक काल से नहीं बचा जा सकता। अगर काल से बचना चाहते हो तो सतगुरू की तलाश करो। सतगुरू कौन है? सतगुरू, शब्द ही है। वह शब्द देहधारी सतगुरू के बिना कैसे मिलेगा? यह भी एक बात कहने की और समझने की है। देहधारी सतगुरू ही उसी को कहा जाता है जो उन शब्दों का जानकार है। वाकिफकार भी उसी को कहा जाता है जो उन शब्दों की मंजिलों से होता हुआ अपने घर पहुंचा हुआ है और वह धारा के सहारे उन मंजिलों से उतर कर वापिस भी आता है और जाता है। जैसे एक बाजीगर बांस के ऊपर चढ़ जाता है और ऊपर कला करके फिर बांस के ऊपर से मंजिलें—मंजिले उतर भी आता है।

इसी प्रकार संतों की धार यह सुरत है। यह उस बाजीगर की तरह उस बांस पर कला करती रहती है और वही उस चौंकी पर करतब करती हुई चलती है। ऊपर तो कुछ और होती है और नीचे आकर वह (बाजीगर की तरह) भीख मंगी बन जाती है। जैसे—ऊपर

तो उसे सभी देखते हैं कि वह ऊपर शिखर में पहुंच गया है। उनमें तो बहुत बड़ा बन जाता है परन्तु वहां से आकर वह भीख मांगना शुरू कर देता है। इसी तरह अगर कोई यह कहे कि हम बारह महीनें और आठ पहर संत बने रहते हैं। नहीं। आठ पहर संत गति में नहीं रहा जाता। जब यह सुरत सतलोक में पहुंच जाती है तब संत गति में चला जाता है। मेरी बातें अगर सच्ची न मानो तो न सही। कबीर साहब का, शिवब्रत लाल जी का, अरमान साहब का यदि कहने का हक था तो मेरा भी कुछ कहने का हक है। सब अपने—अपने हिसाब की (विवेक की) बातें कहते हैं पर मैं अपने ही तजुर्बे की बातें आपको बताता हूं। जब वह सुरत नीचे उतरती है तब उसकी दो धाराएं बन जाती हैं। अब सतगुरू कहां खोजोगे? कोई तो उन दो धाराओं में ही अटक कर बैठ जाता है। वे धाराएं कौन सी हैं? वे हैं ज्योति और निरंजन की। इन ज्योति और निरंजन से फिर धाराएं चलती हैं। सोचो! वही धार ज्योति निरंजन के स्थान से नीचे उतरती है। यहां तीन भग भोगे जाते हैं। उनकी वहां तीन धाराएं बन जाती हैं। वे तीन धाराएं कौन सी हैं? ब्रह्मा, विष्णु, महेश की। ये तीन धाराएं उन दो धाराओं से बनती हैं और यही तीन धाराएं नीचे आकर अपना काम शुरू कर देती हैं। जैसे दरख्त की शाखाएं फूट कर ऊपर की तरफ जाती हैं। वह धारा ऊपर से उतर कर आती है। राधास्वामी धाम से चलती है। उसी धारा में से तीन बनती हैं। वे कौन सी होती है? वेदांती उनको 'औम्' कहते हैं। अ—उ—म तीन शब्दों के बनने के कारण ही औम् कहते हैं। जो तीन धाराएं बनती हैं, तीन गुण बन गए—रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण। यही गुण ब्रह्मा, विष्णु और महेश के बन गए। इस जगह का नाम भी त्रिकुटी रखा है। यहां से तीन शाखाएं या धाराएं चल पड़ती हैं। सोचो! सत पुरूष राधास्वामी दयाल की धारा तो एक ही थी। उसमें से निकली तो दो बन गई। उस धारा

से धारा निकली तो तीन बन गई। मैं इन धाराओं—सतगुरू पूरा खोजने की ही बातें कहता हूं। कोई तो दो धाराओं में ही अटक जाता है। कोई इन तीन धाराओं में अटक जाता है। उन तीनों से पीछे फिर 10 धाराएं निकलती है। मैं पढ़ा लिखा नहीं हूं पर मैं महर्षि शिवब्रतलाल का पोता हूं। सो ही मैं कह देता हूं। बट्टा लगेगा तो महिर्ष जी को ही लगेगा। मुझे ये डियूटी क्यों दी थी? उन दसों धाराओं को तुम्हें मानना पड़ेगा। वे दसों धाराएं कौन सी हैं? वे धाराएं दस अवतारों की हैं। ये दस अवतार कहां से निकले? ये दसों धारा, ब्रह्म की हैं। ये ब्रह्म के अवतार हैं और हमारे वेद भी ब्रह्म की ही बातें कहते हैं। पार ब्रह्म की बातें चलती हैं तो कह देता है—**नेति—नेति (न + इति)** ये वेद औम् से ही बने हैं। सो ये अ—उ—म इन तीनों गुणों में ही हैं।

तीन गुणन की भक्ति में फंस रहा संसार।

वहां तीन धाराएं बनी थीं और इन तीनों में से ही 10 धाराएं बन गईं। कोई तो पहली ही धारा में अटक जाता है और कोई दूसरी में अटक जाता है। कोई भाई चला तो वह तीसरी में अटक गया और जो कोई इन तीनों से भी आगे चल पड़ा तो इन १० धाराओं में आकर अटक गया। उसने कौन सी धारा पकड़ी? अब ये हैं—कच्छ—मच्छ बराह, नरसिंह भगवान यहां तक तो मेल मिलाप था। नर सिंह भगवान के तो दो रूप हो गए। आदमी का और पशु का। आगे राम और कष्ण आए तो इनकी पूजा शुरू हो गई। इनकी पूजा का खंडन न करना। इनकी पूजा से इनके गुण भी तुम्हारें अंदर आ जाएंगे। यह भी कह देता हूं—राम की पूजा से राम के गुण आएंगे। वह मर्यादा वाला बन जाएगा। कष्ण की पूजा से कष्ण के गुण आएंगे। ज्यादा और क्या कहूं? अपने—अपने गुण काम करते हैं। जिनकी तुम पूजा करते हो उनके गुण तुम्हारे अंदर आ जाएंगे। राधास्वामी धाम से, अनामी से, अकाल पुरूष से, वाहे

गुरू से, जो धारा चली या उस रमे हुए राम से जो धारा चली नीचे आकर दो धाराएं चलीं उन दो धाराओं में भी मुक्ति मिलती है। उनकी मुक्ति क्या है? स्वर्ग और बैकुण्ठ यही उनकी मुक्ति है। उन से नीचे वाले भी सभी स्वर्ग बैकुण्ठ की टिकटें काटते हैं। सो हम आगे अवतारों में फंस जाते हैं। इन दस धाराओं, दस शाखाओं की पुड़चले फूट गई उस वक्ष की। उन्होंने भी वही काम बताया। उनकी वाणियां पढ़ते हो तो उन्होंने खुद वाणियां भी कहीं हैं। मेरे पास कल दो वैरागी साधु आए। उन्होंने बातें की। मैंने कहा—मैं तो पढ़ा लिखा नहीं हूं। आप क्या चाहते हो? उन्होंने कहा—बस, हम तो दर्शन करने ही आए थे पर हम एक बात भी पूछना चाहते हैं। आप हमें यह बताओ कि इस राधास्वामी का ध्येय क्या है? मैंने कहा—मुझे ध्येय का तो पता नहीं है। ये बता बात देता हूं कि ये दयाल का मत है। काल मत से निकाल कर दयाल मत में ले जाता है। आप अपने ध्येय का वर्णन करते हो तो आप बताओ। आपका ध्येय क्या है? आप राम को तो मानते हो? उन्होंने कहा—हां, बिल्कुल मानते हैं। हम राम के ही भक्त हैं। हम रामायण का पाठ भी करते हैं।

ऐ सत्संगियो! मैं इन पाठ करने वाले का आदर करता हूं। कथा वार्ता अच्छी चीजें हैं। पर संतमत में तो कथा वार्ता का सहारा लेकर और काम भी किया जाता है। एक आदमी रात और दिन कथा ही कथा पढ़ता रहता है। वह जीवों का उद्धार नहीं कर सकता। कथा तो थोड़ा बहुत पढ़ा लिखा आदमी भी पढ़ कर सुना सकता है। जो अनुभवी कथा है उसे तो करणी करके ही सुना सकता है। वह कथा वार्ताओं से बंधता नहीं है। जैसे हमारे यहां एक महात्मा आया करता था। उसको रामायण इतनी अधिक याद थी कि वह दोहे और चौपाइयों के भी नम्बर बता देता था। रामायण नहीं रखता था। इतनी याद थी। मैंने उससे पूछा तो

उसने बताया मुझे याद हो गई है। जन्म से ही मेरा इसे पढ़ने का अभ्यास है। मैंने पूछा—क्या आप और भी कुछ करते हो? उसने बताया—कुछ नहीं करता। मैं तो केवल रामायण ही पूरी करता हूं। आप लोगों से पैसे ले लेता हूं। मैं पैसे ले जाकर अपना गुजारा चला लेता हूं। मैंने कहा—वाह! सच बोलता है। पाखंड तो नहीं है। मैं इन बातों की भी बड़ाई करता हूं पर वे तिर नहीं सकते।

गाई गीती, रह गई रीती।

तिरना है तो संतमत से ही तिरोगे और वह भी काल से बच कर। मैं रामायण के प्रमाण भी दिया करता हूं। तुलसीदास जी का राम से बड़ा प्यार था पर उन्होंने क्यों कहा—

कहां तक करूं मैं नाम बड़ाई।
राम न सकहिं, नाम गुण गाई।।

नाम की महिमा को तो राम भी नहीं जान सका। मैंने उससे पूछा—क्या रामायण में यह बात कही है? उसने कहा—हां। मैंने पूछा—फिर वह नाम कौन सा था? आप लोग उस नाम का वर्णन तो नहीं करते। वह नाम धुनात्मक नाम है। वह धुनात्मक नाम कहां हैं? जो धारा चली, वह धुनात्मक नाम से ही चली थी। वही धुनी नीचे उतर कर दो धाराओं में मंदी पड़ गई। फिर आगे उससे तीन धाराएं फटी तो और भी मंदी पड़ गई। वही धाराएं दस अवतारों की दस धाराओं में बंट कर और भी मंदी होती चली गई। उन्हीं दस अवतारों में से अनेक शाखाएं (धाराएं, पुड़चलें, अंकुर) फूटती चली गई। उनके बारे में क्या कहूं? सभी लोग इन देवी—देवता, पित्तर भूत, गूगा, पीर और हनूमान जी सभी की पूजा पाठों में फंस गए। कबीर साहब की वाणी है—

देवी देव कहै राम से, हमको ठौर बता।
हमसे जो बेमुख हों, लूटो जाओ खा।।

अगर काल से बचना चाहते हो तो सतगुरू पूरा खोजो। उसी

राम की तलाश करो जो जर्रे—जर्रे में रमा हुआ है। अब बड़ा सुन्दर प्रश्न उठ सकता है कि हम उस जर्रे—जर्रे में रमे हुए को एक स्थान पर कैसे खोजेंगे? कितनी सुन्दर बात है? एक होता है निराकार और एक साकार। हम साकार की तो पूजा कर लेते हैं पर उस निराकार की पूजा कैसे करेंगे? एक सर्वदेशीय है और दूसरा एक देशीय है। सर्वदेशीय की पूजा तुम कैसे करोगे? इस बात को तो संतमत ही समझ सकता है। शब्द तो सर्वदेशीय है। ये तो जर्रे—जर्रे में है पर सतगुरू ध्यान बताता है तो उसको एक देशी बना देता हैं और एकदेशीय हो जाता है। जैसे सर्गुण होकर हम निर्गुण में समा जाते हैं। सो—

सतगुरू खोजो हे प्यारी, जग में दुर्लभ रत्न यही।

पहला रत्न यही है कि उस सतगुरू की तलाश करो। मैं उन्हीं के लिए ये बातें कहता हूं जिन्होंने अपने घर जाना है। मैं अपनी बातें बताता हूं। मेरा एक प्रेमी था। वह बहुत अच्छा था। एक दिन वह किसी दूसरे प्रेमी से बोला—क्या महाराज जी मुक्ति दिला देंगे? मैंने कहा—मैंने मुक्ति का ठेका तो नहीं उठाया है। मैं तो बातें बताता हूं। उसने मेरी आलोचना भी की। मैंने उससे कहा—तू अपनी आस औलाद की शपथ लेकर बता। अगर तू झूठ बोलेगा तो तेरा वंश ही खत्म हो जाएगा। तुझे इतने वर्ष हो गए है मेरे पास आते, तू मेरी कमी या दोष बता दे।

ऐ सत्संगियो मैं सचाई से बताता हूं। गांव में रहता हूं। मैंने किसी का बुरा नहीं किया है। किसी को धोखा नहीं दिया है। क्या तुम एक जीवन में ही उस शब्द में जाना चाहते हो? अगर तुम इसी जिन्दगी में ही जाना चाहते हो, तो दो बातों को मजबूती से पकड़ लो। पेट के लिए किसी को धोखा मत दो। दूसरा उस शब्द की कमाई करो। क्या करोगे? तुम उस गुरू पर अटल विश्वास रखो। पर किस सतगुरू पर? मिसाल तो गंदी है पर तुम्हारी पुष्टि कर

देगी। एक पतिव्रता स्त्री का पति हिजड़ा है तो उस पर विश्वास करने से कभी भी बच्चा पैदा नहीं होगा। उस गुरू पर विश्वास रखो जो शब्द भेदी है। उस शब्द भेदी सतगुरू पर विश्वास करो जो दसवीं धार को प्रगट करके नीचे उतर आया है। वही सतगुरू तुम्हारा भला कर सकता है। मैं सतगुरू नहीं हूं। सतगुरू तो मेरा सतगुरू ही था। मैं तो अपने सतगुरू के सहारे पर अपना गुजारा करता हूं। आकर आप लोगों की डियूटी बजा देता हूं। शब्द किसको तलाश करना है?

सतगुरू पूरा खोज। हम इन दस प्रकार के शब्दों में एक—एक में फंस जाते हैं और इन शब्दों में फंस कर काल के जीव बन जाते हैं। जैसे—आठ सिद्धियां और नौ निधियां रोक लेती हैं। ये भी रास्ते के शब्द ही हैं। जैसे किसी बे—टिकट यात्रा करने वाले को रास्ते में पुलिस पकड़ लेती है तो उसकी यात्रा पूरी नहीं हो पाती। पर उसके पास पूर्ण यात्रा—पत्र (टिकट) होगा तो कोई बोल नहीं सकेगा।

हम एक बार यहां से कहीं गए। एक प्रेमी ने कहा—आप कहां जाओगे? मैंने कहा—हमने कहीं जाना है। उसने कहा—आपको एक कागज लिख कर दे देता हूं। आपको रास्ते में कोई भी नहीं रोकेगा। वह अच्छा सत्संगी था। उसने कागज लिख दिया। जो भी आया तो उसको कागज दिखा दिया। किसी ने कुछ भी नहीं कहा। ऐसे ही सतगुरू की एक टिकट होती है। मैंनें अपनी मिसाल देकर यह बात बताई है। वह टिकट दिखाई जाती है। अगर वह धुर दरगाह का शब्द भेदी है, तो जीव का उद्धार करवा देगा। न तो विद्या से तिरना है और न धन से तिरना है। न रूप से तिरना है और ज्ञान से ही तिरना है। केवल एक करणी से ही तिरना है। करणी वाला सतगुरू मिल जाता है, तो उसका भला ही भला है।

सो काल से बचना चाहते हो तो सतगुरू की खोज करो।

अगर काल से बचना चाहते हो तो शब्द को खोजो। कौन से शब्द की खोज करोगे? जो दसवीं मंजिल का शब्द है। नौ शब्दों को छोड़कर, उस शब्द में पहुंच जाओ। आठ सिद्धियों और नौ निधियों को त्याग कर अगली मंजिल पर कदम रख जाओ। इसी को तुलसी दास ने कहा है—

गो गोचर जहां तक मन जाई।
इतने माया समझो भाई।।

उस अगोचर में पहुंच जाओ। यही और महात्माओं ने कहा है—

हां म्हारी हेली ! कांकड़ बैरी का बास;
मारेगा छोड़े नहीं, चाले हे गैव की गोली।

वहां तो गैब की गोलियां चलती हैं। वह मार देगा। वह कौन है? वह अधूरा शब्द है। शब्द तो वहां कांकड़ पर बैरी के बास में भी है। पर उस शब्द ने सारी ही दुनिया डुबो दी। ऋद्धियां—सिद्धियां पाकर सब वहीं रह जाते हैं। काफी लोग तो सोहम् का जाप करते हैं। मैंने भी सोहम् को बहुत जपा है। 'सोहम्' का अर्थ है—तू भी ब्रह्म है और मैं भी ब्रह्म हूं। धुनी होती है उस देश में। उस देश में पहुंचोगे तो उस धुनी को सुनोगे। वहां बड़ी सुहावनी धुनी है।

धुनी हो मन मोहिनी, सुनता है बिन काना।
खोलो, ब्रह्म द्वार को फिर आगे को जाना।।

ये महात्माओं की साखें मिलती है। इस धुनी को छोड़ कर फिर आगे चलना पड़ता है। जो हम शब्दों का जाप करते रहते हैं ये सतलोक से नीचे का जाप है। हमें वहां नहीं ले जाएगा बल्कि यह तो हमें छठे चक्कर से ऊपर भी नहीं ले जाएगा क्योंकि यह जाप तो हम जुबान से ही करते हैं। यह जुबान का जाप तो वर्णात्मक जाप है। यह तो यहीं रख लेगा।

रूकगे कंठ दसों दरवाजे मचगी ध्यारी रे।
मनुवा नाहिं विचारी रे लोभीड़ा नाहिं विचारी रे।।

जब ये नौ दरवाजें रूक जाते हैं तो हमारी जुबान भी बंद हो जाती है। फिर कौन बोल सकता है? वह धुनी तो कभी भी बंद नहीं होती है। जैसे हम कितने ही सत्संग करते हैं। घंटे दो घंटे में समाप्त कर देते हैं। पर जो धुनी है वह कभी भी समाप्त नहीं होती है। वह हर वक्त गूंजती रहती है। हम ही समाप्त हो जाते हैं पर वह धुनी समाप्त नहीं होती है। सो यह कौन कहता है—हे सखी ! अगर तू काल से बचना चाहती है तो सतगुरू पूरा खोज? मेरा विचार तो यह है कि बुद्धि कहती है और सखी किसको कहती है? बुद्धि की सखी सुरत है, आत्मा है। क्यों है? क्योंकि यह बुद्धि उस सुरत से ही निकली है। यह सारा ही खेल सुरत में से निकला है। जब वह सुरत, जीवात्मा आई तो उसी ने तीन गुण पैदा कर दिए। उन्होंने ही दस इंद्रियां पैदा कर दी। उसमें से चार अंतःकरण पैदा हो गए। ये मन बुद्धि चित अहंकार उसी में से ही पैदा हो गए। इसीलिए इस बुद्धि ने काम करना शुरू कर दिया। मैंने तो अपने विचार की बातें कही हैं। अगर कोई नहीं मानता है तो मत मानो। मैं तो अपने गुरू की डयूटी बजा रहा हूं। उनका हुक्म था। मेरी बात समझ में आती है तो ठीक है। नहीं आती है तो उसे छोड़ दो। सो बुद्धि यही कहती है—हे सखी! अगर काल से बचना चाहती है, तो तू सतगुरू पूरा खोज। तो तू रोज जन्म लेती है और मरती है। वैसे तो तीन चीजें अमर बताई हैं—जीव, ईश्वर और प्रकति। सखी या सुरत तो जीव को ही कहा जाता है। यह है तो अमर। क्योंकि न तो जलती है न मरती है। पर जन्म मरण के बंधन का तो दुख है ही। अपने कर्म का भोग तो भोगना ही पड़ता है। इसीलिए बुद्धि कहती है कि हे सखी! अगर तू काल से बचना चाहती है तो पूरे सतगुरू की खोज कर। अगर तू इन फंडों में, जो छोटे—छोटे पूजा पाठ हैं, इन में ही रह गई, होम—यज्ञों में ही रह गई और इस उरले व्यवहार में ही फंसी रही, तो फिर काल से नहीं बचेगी। अब तो तू

हिम्मत करके उस सतगुरू की, उस शब्द की तलाश कर ले। तू हर वक्त ही उस शब्द का सुमरन करती रह। उस प्रकाश को देखती रह। शब्द में से प्रकाश प्रगट हो गया और इस प्रकाश से सारा ही खेल रच दिया। जहां प्रकाश नहीं पड़ता है वहां बीज भी पैदा नहीं होता है। हम उसी प्रकाश से ही आए हैं और उसी में जाना है। इसीलिए सतगुरू पूरा खोज। अगर वह सतगुरू व शब्द पूरा मिल जाता है जिसमें से दूसरे नौ शब्द और निकले हैं, तो हमें सतगुरू पूरा ही मिल गया और हमने अपना जीवन सफल कर लिया।

मैंने भी अपने गुरू को अंधाधुंध पकड़ रखा था। मैं बड़ा प्यार किया करता था। उस प्यार ने ही मेरा काम बना दिया। मैं यह भी नहीं कहता कि तुम प्यार मत करो। एक कारण ऐसा भी हो जाता है कि सतगुरू से श्रद्धा टूट जाती है। मैं बता देता हूं कि अगर सतगुरू पूर्ण है तो बेशक उसके शिष्य की श्रद्धा टूट जाए वह उसको जरूर ही काल से बचा लेगा। क्योंकि बेटा—बेटी नालायक हो जाते हैं पर मां—बाप नालायक नहीं हो सकते। सो सतगुरू तो सतगुरू ही होता है। जिसकी डोर पकड़ लेता है उसको छोड़ता नहीं। उसको ले जाता है। जिसने एक बार भी शब्द की धुनी सुन ली, तो मरते वक्त वह शब्द उसको आकर पकड़ लेगा। छोड़ेगा नहीं पर शब्द अधूरा है तो अधूरी ही जगह पर रह जाएगा। जिसको पूरा सतगुरू मिल गया और उसने पूरे शब्द का भेद बता दिया है तो वह तीन जन्म तक निश्चय ही वहां पहुंच जाएगा। उसे वहां की टिकट मिल गई।

मैंने आपको थोड़ी बातें बता दीं। असलियत तो यही थी। सतगुरू पूरा खोजने की एक कड़ी पर ही बातें की। मैंने कथाएं, वार्ताएं सत्संग सुने हुए हैं। कीर्तन भी बहुत किए हैं और देखे हैं। जिनको इन कथाओं का ज्ञान है इन्हें पढ़कर माहिर हो जाते हैं।

मेरी बात को तो निष्पक्ष आदमी ही समझेगा। पक्षपाती नहीं समझ सकता है। हम सारी जिन्दगी आरती उतारते रहेंगे, हवन करते रहेंगे। गीता का पाठ करते रहेंगे। मंत्र बोलते रहेंगे। आप लोगों ने उनमें कितनी सिद्धियां देखी हैं। वे भी बहुत देखे हैं। बस इतना ही है कि सिद्धों और गिद्धों में कोई फर्क नहीं है। पर उनमें भी जो विरक्त हुए हैं वही पाते हैं। इन रात दिन कथा पढ़ने वालों का ढंग तो देखा होगा? उन्होंने कथा कण्ठस्थ कर ली और सुनाते रहे। इसमें तो कोई विशेष बात नहीं है। ऐसे तो हर कोई सुना सकता है। हमने सार वचन को कण्ठस्थ कर लिया और सुनाते रहे। क्या बात हुई? यह बात नहीं है। अपना तजुर्बा और अपना काम किया करो। उसमें पहुंचो। कोई भागवत पढ़ता है, कोई गीता पढ़ता है, रामायण पढ़ता है। पर शांति किसी को नहीं मिलती है। शांति कैसे मिले? एक आदमी तो कहता है कि हलुवा, पूरी बनाना सीख ले। पर घर पर न चून है और न घी है। न लकड़ी—कड़ाही है। फिर बताओ वह कैसे बनाएगा? क्या उसे हलवा मिल जाएगा? उसने हलुवा बनाना तो सीख लिया। सो बातें तो काफी सीख लीं। पूरा काम ही नहीं किया है तो शांति कैसे मिलेगी? दंड और मिलेगा। क्यों? कबीर साहब कहते हैं—

बात बनाई जग ठगा, मन प्रबोधा नाहिं।
कबीरा ये मन ले गया लख चौरासी माहिं।।

क्या फिर मैं लख चौरासी से बच गया? नहीं बचा। सो—

जो कहते हैं करते नहीं मुंह के बड़े लबार।
काला मुखड़ा होएगा, साईं के दरबार।।
कहनी मीठी खांड सी, करणी विष की लौ।
कहनी सी करणी करे, तो विष का अमत हो।।

जो कहते हैं, वैसा कर देते हैं तो जीवन सफल हो जाता है। उनकी पहचान क्या है? यह भी मैं अपने ही पांव में कुल्हाड़ी मारता

हूं। आप लोगों को बताता हूं। पहचान यही है कि शांति मिल जाती है। वे किसी की भी बातों में नहीं फंसते। आज गुरूडम चला हुआ है। मैं भी गुरूडम की बातें करता हूं। गुरूडम क्या है? कोई किसी गुरू की निंदा करता है और कोई किसी की निंदा करता है।

ऐ प्रेमियो! सच पूछा जाए तो सच्चा मानव धर्म तो शराब न पीना ही है। हम अपने आप को मानव धर्म के ठेकेदार समझते हैं और शराब पीते हैं तो फिर तो हम मानव धर्म के कातिल हैं। मानव धर्म का ठेका लेकर तो महर्षि दयानन्द आया था। दादू, पलटू, कबीर, रैदास जी आए थे। जो यह कहता है कि मैं मानव धर्म का ठेकेदार हूं और वह शराब पीता है, मांस खाता है, पराई स्त्रियों से पांव दबवाता है, चेलों की कमाई खाता है तो वह मानव धर्म का झूठा ठेकेदार है। उस जैसा पापी धरती पर न आया है और न कभी आगे आएगा। अगर हम मानव धर्म को पकड़ लें तो हमारा सर्वस्व ही सुधर जाएगा और जीवन ही सफल हो जाएगा। अगर हम मानव धर्म के उपर चलें तो आज हमारे देश में त्राहि—त्राहि न रहे। हमारा एक ही धर्म है। समझते हो! जो नेता बने फिरते हैं वे भी अपने—अपने न्यारे धर्म बनाए बैठे हैं। हम महात्मा भी अपने न्यारे—न्यारे धर्म बनाए बैठे हैं। पर समझदार के लिए क्या है?

आए एक ही ठौर से, उतरे एक ही घाट।
समझों का मत एक है, अनसमझे बारह बाट।।

मानों किसी ने कूंए में भांग डाल दी है। जो भी उसका पानी पीता है, वही पागल हो जाता हैं पर वह भांग क्या है? आजकल तो एक बेईमानों की भांग है। मैं कोई गलत बातें नहीं कहता हूं। कोई बुरा मानता हो तो मेरी बात को नोट कर लेना। जो महात्मा बन जाता है। उनमें भी बेईमाना हो जाता है। वे अपने चेलों को लूटते हैं। गुरू बन जाते हैं उनमें भी यही बेईमाना है कि लूटो चेलों को।

आंधी दुनिया, मोधू ज्ञान। लांडा भूत, करे घमसान।।

घमसान ही छलता जा रहा है। ये जो नेता बन जाते हैं ये भी कहते हैं कि परमात्मा क्या है। लूटो दुनिया को और पैसे इकट्ठे कर लो। अरे ! कहां ले जाओगे? सिकंदर बादशाह चालीस कोस का खजाना छोड़कर चला गया। वह उस धन को कहां ले गया? सत्संगियो! अगर मैं भी तुम्हारे पैसे इकट्ठे करता तो बहुत हो जाते। पर मैं कहता हूं कि अगर मैं आज मर गया तो कल दो दिन हो जाएंगे। मुझे तो मेरी संगत का ही काम है। मैं तो तुम्हारी मोगरी तुम्हें ही मार देता हूं। महाराज जी ने कहा था कि अपनी आत्मा को मैली नहीं करना। आग लगे इन डेरों, आश्रमों को। आग लगे मान बड़ाई को। अपनी इज्जत को देखना और मालिक के भजन में रहना। ऐसा न हो कि अपनी आत्मा को ही मैली कर बैठो। यह तो मैं अपने ऊपर कहता हूं। इसे तुम भी अपने ऊपर लागू कर लो। तिर जाओगे। सो हमारे देश में यह हल चल क्यों हैं? मैं राजनीति की बातें तो नहीं करता। पर क्या करूं? सत्संग में ये बातें भी आती हैं। जैसा हम देखते हैं। छोटी सी चिट्ठी बना कर ले आना कि मैं दादू बनकर आ गया और दादू का अवतार हूं। मैं कबीर का अवतार हूं।

मेरे पास एक दिन एक प्रेमी आया। वह चिट्ठी लिए था। उसने कहा—दुनिया में कबीर साहब प्रगट हो गए हैं। मैंने कहा—फिर तो दुनिया का भाग ही जाग गया। यह तो बड़ी ऊंची बात है। उसने पता बताया। मैंने कहा—एक काम तो कर लो। मुझे तो तुम जाने नहीं देते। कहते हो कि तुम क्यों जाओ? संत कबीर के तो बालक नहीं थे उसके तो चार—पांच बच्चे भी हैं और वह कहता है कि मैं कबीर से भी बड़ा हो गया हूं। इसी लिए तो बेड़ा गर्क होता है। अगर मैं कहूं कि मैं राधा स्वामी दयाल का अवतार हूं। मैं कबीर हूं, दादू हूं, तो फिर मेरे पास मत आना। तुम डूब जाओगे। क्योंकि

मैं तो अहंकारी बन गया। काल इसी को तो कहते हैं। वह तो काल का रूप बन जाता है। कबीर साहब ने दीनता नहीं छोड़ी। घीसा साहब ने तो बहुत ही दीनता की थी। नानक साहब ने इतनी दीनता की कि—

नानक नन्हा होय रहो, जैसे नन्ही दूब।
और घास जल जाएगी, दूब खूब की खूब।।

कबीर साहब कहते हैं कि मैं तो एक गरीब आदमी हूं। मैं तो एक जुलाहा हूं। मैं तो कुछ भी नहीं, एक बांदी का पैदा किया हुआ गुलाम हूं। रविदास जी ने बड़ी गरीबी पकड़ी। संतों ने किसी ने भी अहंकार नहीं किया। अगर हमारे जैसे कह देते हैं कि मैं तो राधास्वामी का अवतार हूं तो समझ लो कि यह डेरा ही गिर गया है और गिर गया मैं भी। राधास्वामी दयाल तो दयाल थे और कुल मालिक थे। सो हम इतना कह सकते हैं कि हम अपना काम करते हैं और उन की डियूटी बजाते हैं। उनके घर में पहुंच जाते हैं तो उनके बेटा—बेटी बन जाते हैं।

उन्होंने बातें कहीं। मैंने कहा—चले जाओ और देख तो आओ। पर एक कहना मेरा भी करना कि पास बैठ कर सूई चुभो देना। अगर आह तो करे उसे बता देना कि तू कबीर नहीं है। सिकंदर ने उनका सिर काट दिया था तो भी आह नहीं की थी। अगर खून की धार आ जाए तो कह देना तू पापी और नीचों का नीच है। तू तो कबीर को बट्टा लगाने वाला है। उसको पांच—दस जूते मारना और अगर दूध की धार निकल आए तो चरण पकड़ लेना और मुझे भी आकर बता देना। मैं भी तिर जाऊंगा। उनके चरण पकड़ लूंगा। कबीर के चरण पकड़ कर तो सारी ही दुनिया तिर सकती है। पर तुम कबीर बनो। अगर तुम कबीर बन जाओ तो मेरा एक ही दोहा काम कर देगा। कबीर के चरणों में जाकर तो सारे ही देश का उद्धार हो सकता है। इन बनावटी कबीरों ने और

बनावटी दादू, पलटू, रैदासों ने हमारे देश का भट्ठा बैठा दिया। इसीलिए हमारा राज भी बिगड़ता जा रहा है। राजे महाराजे भी बिगड़ रहे हैं क्योंकि उन्हें महात्मा ही सुधारा करते थे। ये भी बेचारे बिगड़ते जा रहे हैं क्योंकि इनकी शिक्षा ही ऐसी हो गई। बनावटी दादू, कबीर, रैदास, राधास्वामी बनकर बैठ गए, कि मैं राधास्वामी का अवतार हूं। उनको शर्म नहीं आती। बेटा बेटा ही रहता है और बाप बाप ही होता है। मेरी बात को समझो, मैं क्या कहता हूं।

सो दूध की धार आ जाए तो समझो कबीर प्रगट हो चुके। जब रामानन्द का सिर काटा तो आधे सिर से दूध की धार आई और आधे से खून की धार आई। तब उस सुलतानी बादशाह ने पूछा—दूध और खून की धारें क्यों आई? उन्होंने बताया कि इसमें दूई थी। कबीर साहब में तो दूध की आई, खून की नहीं। उनमें सब दूध था। दूई नहीं थी। सो तुम सभी को अगर कबीर मिल जाए तो सभी के पाप कट जाएं। दादू, पलटू, नानक, रैदास उन में कौन सी बातें थी? एक ही बात थी। दादू भी कबीर था, पलटू नानक भी कबीर थे और तुम भी कबीर हो। अगर मेरी बातों को मान लो और इस लाइन पर चल पड़ो तो तुम भी कबीर हो। फिर तुम्हारे अंदर भी खून नहीं रहेगा। दूध हो जाएगा। अगर तुम कबीर बनना चाहते हो तो तुम सतगुरू के वचन को मानो। सतगुरू क्या कहता है?

कबीर—कबीर क्या करै, सोधो अपना शरीर।
पांचों इन्द्री वश करे, ता का नाम कबीर।।

पांचों इन्द्रियों को वश में करना है। ये पांचों इन्द्रियां ही हमें नचाती फिरती हैं। जो पांचों इन्द्रियों को वश में कर लेता है वह पूर्ण सतगुरू माना जाता है और वह राधास्वामी धाम का वासी हो जाता है। ये इन्द्रियां ही हमें रोकती हैं। पहले महात्मा और योगी

तीन बंद लगाते थे। तन, मन और सुरत स्थिर कर लेते थे। आज कलयुग में तीन ये बंद हैं—

आंख, कान, मुख बंद कराओ। अनहद झींगा शब्द सुनाओ।।

महात्मा गांधी ने भी यही बताए। उन्होंने खोल कर नहीं बताया कि ये तीन बंद किस प्रकार हैं। परन्तु उनकी मूर्तियों में तीन बंदरों को देखते हैं। एक ने कान बंद किए हैं, दूसरे ने आंखों पर हाथ लगा रखा है और तीसरे ने अपना मुंह बंद किया है। ये इंद्रियां ही प्रबल है। तुम से पांचों इन्द्रिया वश में न की जाएं तो दो इंद्रियों को काबू में कर लो, तो भी तिर जाओगे। इनमें एक जिव्हा है—

जिव्हा तो अटपटी बोले आल—पचाल।
बोल बाल के भीतर बड़ जा, जूता पिटै कपाल।।

सो एक तो जिव्हा इन्द्री है इसको काबू में करो। खा कर मस्त हो जाते हैं। एक शब्द गाया करते थे—

आज मोहे दर्शन दीजो जी कबीर।
हिन्दू के तुम सतगुरू कहियो, मुसलमान के पीर।।

आगे कहते है—

खाई शब्द दूध की खीर।

सो खाना तो शब्द—दूध की खीर का है। वह शब्द—दूध की खीर खानी है। वह शब्द रात और दिन धुनकारे देता रहता है।

तुम कबीर बनना चाहते हो और अहंकार भरा पड़ा है। दूई भरी पड़ी है, दूसरों की निंदा करना सीखते हैं। बड़े बड़े पाप, जुल्म करते हैं और कहते हैं कि मैं दादू हूं। मैं कबीर हूं। मैं राधास्वामी बना बैठा हूं। वह तो जुल्मी है। उनमें तो ये पांच चीजें रहती ही नहीं हैं। अब पांच चीजें तो पांचों इंद्रियां ही हैं। जैसे कान, आंख, जिव्हा, नाक और त्वचा है। ये सभी मजे लेती रहती हैं।

सो प्रेमियो ! जिसने पांचों इन्द्रियों को काबू में कर लिया उसे

चाहे कबीर कहो, या दादू, पलटू कहो या राम भी कह सकते हो। कहना ही नहीं वह करणी का धनी बन जाता है। अपने घर पहुंच जाता है। अब तो मैंने एक ही इन्द्री की बातें बताई कि इस एक जिव्हा को ही काबू में करो। और इंद्रियां परे हैं। इन विषय–विकारों को छोड़ो, पराई स्त्री को माता–बहन समझो।

एक नारी सो सदा जती।
एक टाइम खा वह सदा व्रती।।

मैंने तो दो ही इंद्रियां बताई हैं, ज्यादा नहीं। बाकी को चाहे खुली घूमने दो। तिर जाओगे। यह करणी का मार्ग है। बातों का नहीं है। मैं एक बात बता दूं जिसका सतगुरू से अभाव हो जाए और उसमें श्रद्धा नहीं है तो उसे अपनी जेब टटोल लेनी चाहिए। सोचे, कभी तूने खाना तो खराब नहीं खा लिया है। तू किसी निंदक के पास भी बैठ सकता है। या तूने कोई बेईमानी कर ली है। काला छींटा सफेद कपड़े पर ही दिखाई देता है। काले कपड़े पर काला छींटा दिखाई नहीं देगा। सो गुरू से अभाव होता है तो पवित्र का ही होता है। अपवित्र का नहीं। अपवित्र तो हर वक्त अपवित्र रहता है। पर पवित्र के अपवित्र ही होते ही अभाव हो जाएगा। पवित्र है तब तक तो भाव है। अपवित्र कब हुआ? या तो किसी का अन्न ऐसा ही खा लिया, या किसी की कोई चीज चुरा ली, या निंदा बुराई सुन ली या कोई और खोटा कर्म कर लिया। अपनी कमी दूर कर देनी चाहिए। अपने आप ठीक हो जाएगा। मैं तो यही एक बात जानता हूं। कोई गलती हो जाए तो एक घंटे की जगह दो घंटे ध्यान में बैठा जाए। मैला कपड़ा होता है तो धोबी भी दो तीन भट्ठी चढ़ा देता है। सो आप लोग भी भट्ठी चढ़ा दिया करो। एक की जगह दो घंटे बैठो। जब प्रकाश आ जाए, शांति मिल जाए तो समझना अब वह दाग उतर गया है। जब कपड़े में सफेदी आ जाती है तो धोबी उसको और ज्यादा नहीं धोता है। सो

जब तुम्हें प्रकाश आ जाता है, तो सफेदी यही है। प्रकाश आ जाए तो सोच लेना कि अब आत्मा निर्मल हो गई है। वह धब्बा उतारने का और कोई यत्न नहीं है। इसी को कहते हैं कि जत्न करो सखी साईं मिलन का। साईं के मिलने का यत्न यही एक है और कोई यत्न नहीं है।

।। राधास्वामी।।

ध्यानाकर्षण बिन्दु

सभी सत्संगियों को स्मरण कराया जाता है कि प्रत्येक आश्रम से सत्संगियों की दिनोद धाम में सेवा की बारी आती है। अतः आप सभी अपनी-2 शाखा में जाकर अपनी सेवा का समय पूछें और निश्चित समय पर धाम में सेवा तथा दर्शन लाभ उठायें।

अक्तूबर मास के लिए सेवा कार्यक्रम

1	दादरी	29 दिसम्बर – 04 जनवरी
2	सिवानी	05 जनवरी – 11 जनवरी
3	हिसार	12 जनवरी – 18 जनवरी
4	हांसी	19 जनवरी – 25 जनवरी
5	पुट्ठी सामाण	26 जनवरी – 01 फरवरी
6	मोठ	02 फरवरी – 08 फरवरी

आगामी मास के सत्संग

26 जनवरी, सोमवार (बसन्त पंचमी) अण्टा

06 फरवरी, शुक्रवार (पूर्णमासी) सिवानी

अहंकार

महर्षि शिवव्रत लाल जी

अहंकार घमण्ड को कहते हैं यह घमण्ड जहाँ रहता है, वहाँ ही बर्बादी मचा देता है। हम तुमको इसका आदि से लेकर अन्त तक का नक्शा दिखाते हैं। सबसे पहले एक को एकपने का विचार हुआ। वह अनेक होकर सूरतों में प्रकट हुआ।

एक से लेकर शंख तक में इसी तक की गिनती होने लगी। ब्रह्म ने कहा–मैं हूँ। मैं के कहने से इसमें प्रकति उत्पन्न हो गई और संसार बन गया। ब्रह्मा को अपनी रचना का अभिमान हुआ और वह बुरी तरह से फँस गया, यहाँ तक कि इसके लिए हिन्दुओं के यहाँ कोई मन्दिर और पूजाघर नियत नहीं है। नारद (ब्रह्मा के पुत्र) को ज्ञान का अभिमान हुआ। वह पाँच घड़ी से अधिक कहीं ठहर नहीं पाते और सदा डाँवाडोल फिरते रहते हैं। राजा बली को अपने दान का गर्व हुआ। वह वामन जी के हाथ से छला गया। भस्मासुर को तप द्वारा वरदान के घमण्ड में जलाकर भस्म कर दिया। रावण को अपने बल के घमण्ड से देवता और मनुष्यों को आधीन करने का विचार हुआ। श्रीराम के तीरों से मारा गया। सहस्त्रारअर्जुन को राज का घमण्ड हुआ। इसके कारण परसराम जी ने 21 बार घमण्डी क्षत्रियों से भूमि को साफ कर दिया। राजा नग को ब्रह्मणों को दान देने का अभिमान था। वह कुएँ में गिरगिट होकर गिर पड़ा। ऐ परमपिता! दाता दयाल! तू इस पापी, अहंकार के हाथों से हमको बचा। हम में असलियत की समझ बूझ नहीं है और न हम उसको जान

सकते हैं। यह अहंकार कई प्रकार का है। धन का अहंकार, सुन्दरता का अहंकार, विद्या और बुद्धिमता का अहंकार, बल का अहंकार, आचरण का अहंकार, शासन का अहंकार आदि–आदि। कोई कहाँ तक इनको गिनाये। इन सबका परिणाम वही एक है। मत्यु। मत्यु इसी से पैदा होती है। क्या तुम मरना चाहते हो? क्या तुमको जीवन से प्रेम है? फिर अहंकार न करो। इसको दबाकर रखो वरना तुमको कहीं का भी न रखेगा और ऐसी जगह ले जाकर मारेगा जहाँ पानी तक नहीं मिलेगा। कबीर साहब कहते हैं–

कबीर काहे गर्विया, काल गहे कर केश।
ना जानू कित मारसी, क्या घर क्या परदेश।।

जीवन दर्शन

हमें जो सुख–सुविधा मिली है, वह संसार की सेवा करने के लिए ही मिली है। मनुष्य शरीर अपने सुख–भोग के लिये नहीं मिला है, प्रत्युत सेवा करने के लिये, दूसरों को सुख देने के लिए मिला है। मनुष्य को भगवान ने बड़ा अधिकार दिया है कि वह जीव–जन्तुओं की, मनुष्यों की, ऋषि–मुनियों की, सन्त–महात्माओं की, देवताओं की, पित्तरों की, भूत–प्रेतों की, सबकी सेवा कर सकता है। और तो क्या, वह साक्षात् भगवान की सेवा कर सकता है।

अनमोल वचन

- अन्तिम समय में जैसी भी कामना अथवा आशा मनुष्य रखता है, उसी के अनुसार मनुष्य जन्म पाता है। *-संत तुलसी साहब*
- मनुष्य चोला एक महान दुर्लभ पदार्थ है। इसके अन्दर नाना प्रकार की चेतन मायावी शक्तियों के भण्डार भरे हुए हैं। *-कबीर साहब*
- आजकल वैज्ञानिकों ने ऐसी मशीनों का आविष्कार किया है कि एक सूक्ष्म वस्तु अपने वास्तविक रूप से सौलह गुना अधिक दिखाई देती है, लेकिन आत्मा और आत्मिक लोक किसी भी मशीन से नहीं देखे जा सकते। *-महर्षि शिव्रवत लाल जी*
- हमारा अन्तःकरण मलिन होने से सत्संग का रंग नहीं चढ़ता। *-परमसन्त ताराचन्द जी महाराज*
- व्यक्तिगत स्वार्थ मनुष्य के ज्ञान को हरकर उसे अँधा बना देता है। *-हजूर कंवर सिंह जी महाराज*

ज्ञान-सार

- **जैसे मनुष्य शरीर बार–बार नहीं मिलता, ऐसे ही मनुष्य शरीर मिलने पर भी सत्संग बार–बार नहीं मिलता।**
- **सत्संग हमारे पुरुषार्थ से नहीं मिलता, प्रत्युत केवल भगवत्कृपा से मिलता है।**
- **जहाँ स्वार्थ होता है, वहाँ सत्संग नहीं होता, प्रत्युत कुसंग होता है।**
- **हर हाल में खुश रहने की विद्या सत्संग से ही मिलती है।**
- **जैसे भीतर अग्नि कमजोर हो तो भोजन पचता नहीं, ऐसे ही भीतर लगन न हो तो सत्संग की बातें पचती नहीं।**
- **भगवान की विशेष पहचान है, सत्संग प्राप्त होना।**

शतावरी के विविध प्रयोग

शतावरी की खीर बनाने की विधिः शतावरी की खीर बनाने के लिए मिट्टी के बर्तन में आधा किलो दूध में 10 या 15 ग्राम शतावरी चूर्ण धीमी आँच में खीर की तरह उबालें और जब तीन चौथाई भाग रह जाये तब मिश्री मिला दे। प्रातः निराहार तपेदिक के मरीज को यह खीर खिलाएँ।

(शतावरी की खीर का सेवन क्षय रोग (तपेदिक) में टानिक का कार्य करती है। फेफड़ों के क्षय के नाश के लिये दूध के साथ शतावरी की खीर बनाकर कुछ सप्ताह लेनी चाहिए।)

इसके अतिरिक्त शतावरी का चूर्ण के रूप में भी सेवन किया जाता है। वीर्यवद्धि और शुक्रवद्धि के लिए शतावरी का चूर्ण एक चम्मच फाँक कर ऊपर से दूध पीए। सुबह तथा रात को डेढ़–दो मास तक ले अथवा ऊपर दी गई विधि से बनाई शतावरी की खीर बनाकर खाये।

अन्य सेवन विधि : 1. गाय के ताजा घी 2 चम्मच में, शतावरी का चूर्ण आधा चम्मच और एक चम्मच पिसी हुई मिश्री या शक्कर मिलाकर भी ले सकते हैं।

2. शतावरी का चूर्ण घी में मिलाकर दूध के साथ भी ले सकते हैं।

3. पित कुपित होने पर शतावरी चूर्ण मधु (शहद) में मिलाकर चाटने से और वात कुपित होने पर शतावरी चूर्ण दो भाग और पीपर का चूर्ण एक भाग और अन्दाज से शहद मिलाकर चाटने से फायदा होता है।

शतावरी के चूर्ण का दूध के साथ सेवन करने से, मुखपाक, आतों के अल्सर, रक्तपित, महिलाओं का श्वेत प्रदर, कमर दर्द, अशक्ति, थकावट, अनिद्रा, मिर्गी, मूत्रविकार, मूत्र में रक्त आना, मूत्रावरोध और धातुक्षीणता आदि अनेक रोगों में लाभप्रद है।

पुस्तक "स्वदेशी चिकित्सा सार" -डा. अजीत मेहता "आयुर्वेद रत्न"

lRlax&lkj

कौसली

14.9.2003

एक बार महात्मा नामदेव कहीं बाहर गया हुआ था। तब उसकी झोंपड़ी में आग लग गई। उसके घर की बहुत सी वस्तुएँ तो झोंपड़ी में जल गईं, परन्तु बहुत सी वस्तुओं को लोगों ने भारी मेहनत करके बाहर निकाल लिया और उनको जलने से बचा लिया। थोड़ी ही देर बाद में नामदेव जी वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने यह सब देखा और फिर लोगों

द्वारा बचाए हुए अपने एक—एक सामान को आग में फैंक दिया। लोगों ने उनसे पूछा—हमने तो बड़ी मेहनत करके आपके इस सामान को बचाया था परन्तु आपने इसे वापिस आग में क्यों फैंक दिया? महात्मा नामदेव जी ने उत्तर दिया—शायद परमात्मा को मेरे घर का सामान अच्छा नहीं लगा, इसलिए मुझे इस सामान का क्या करना है? मैं तो मालिक की मौज में ही खुश हूँ।

मालिक की मौज को समझना और उसकी मौज में रहना प्रत्येक के वश की बात नहीं है। यदि मनुष्य मालिक की मौज में रहना सीख जाए तो उसको कभी भी कोई दुख नहीं हो सकता है। सन्तमत में तीन ही चीजें होती है, सतनाम, सतगुरु और सत्संग। जब जीव को यह तीनों चीजें मिल जाती हैं, तो उसको संसार की अन्य किसी वस्तु की कोई भी आवश्यकता नहीं रहती है। तब उसे सभी सुख प्राप्त हो जाते हैं। सतगुरु जीव को नाम की वह दौलत बख्श देता है जिससे वह मात्र जगत में ही सब आनन्द प्राप्त नहीं करता वरन् अगत में मोक्ष को भी प्राप्त करके परमानन्द में पहुँच

जाता है। परन्तु बहुत से जीव नाम लेकर भी वे सतगुरु और नाम की कद्र को नहीं समझते हैं। इसलिए सतगुरु अपने सत्संग द्वारा उसे कदम—कदम पर सन्मार्ग दिखाकर चेताते रहते हैं। जो लोग सतगुरु के वचन में नहीं चल पाते हैं, तब उनको अवश्य ही दुख होता है। कबीर साहब कहते हैं कि—

गुरु वचन माने नहीं, गुरु ही लगावे दोष।
होय दुखी संसार में, मुए न पावे मोक्ष।।

अतः गुरु तो वह माली है जो जीव रूपी वक्ष की अवाँछित टहनियों को काँट—छाँट करके उसको आकर्षक और लाभप्रद बना देता है। गुरु तो वह लुहार है जो शिष्य रूपी लोहे को तपा कर और कूटकर उसकी अमूल्य वस्तु बना देता है। वह उस दर्जी की तरह है जो बेशकीमती कपड़े को टुकड़े—टुकड़े करके ऐसी पोशाक बना देता है जो उसके पहनने वाले की इज्जत करवा देती है। सतगुरु वह सुनार है जो जीवरूपी सोने को तपाकर उसका ऐसा अमूल्य आभूषण बना देता है कि उसे देखने वाले दंग रह जाते हैं। सतगुरु तो कुम्हार की तरह है जो शिष्य रूपी मिट्टी को कूट—पीटकर उसको सुन्दर घड़े का रूप दे देता है।

गुरु कुम्हार, शिष्य कुम्भ है, घड़-घड़ काढे खोट।
अन्तर हाथ सहार दे और बाहर बाहर चोट।।

इस प्रकार से गुरु शिष्य की घड़त करके उसे अपना ही रूप प्रदान कर देता है। इसलिए मालिक के दिये हुए हर दुख को सतगुरु की दात समझकर उसे आदर के साथ सिर झुका कर प्राप्त करना चाहिए अथवा उसे यह समझना चाहिए कि मालिक वह दुख देकर उसकी कोई परीक्षा ले रहा है। अतः शिष्य को हर स्थिति में शान्त रहकर मालिक के भेजे हर दुख को खुशी—खुशी सहन करना चाहिए। लोग शारीरिक दुखों से विचलित हो जाते हैं। वे यह नहीं समझते कि व्याधि तो शरीर का धर्म है, बड़े—बड़े गुरु—पीरों को भी शारीरिक कष्ट हो जाते हैं।

देह धरे का दण्ड है, सब काहू को होय।
ज्ञानी काटे ज्ञान से, मूर्ख काटे रोय।।

सतगुरु कृपा

सात दीप नौ खण्ड में, गुरु समान न कोय।
कर्ता करे न कर सके, गुरु करे सो होय।।

जीव को कष्ट के समय में जितना सहारा सतगुरु दे सकता है, उतना न ही कोई विद्वान, धनवान, रूपवान दे सकता है और न ही कोई राजनीतिज्ञ, ज्योतिषी या कोई किसी भी प्रकार का शक्तिवान ही दे सकता है। इसका साधारण कारण यही है कि संसार में सभी का साथ कम या ज्यादा स्वार्थ का होता है, पर सतगुरु निस्वार्थ, निर्मल हृदय होने के कारण संसारी जीवों के कष्टों के कारण और निदान को सरलता से समझ जाते हैं और चमत्कारिक ढंग से उनको दूर करने की क्षमता भी रखते हैं क्योकि स्वयं परमात्मा ही सब कार्य सतगुरु स्वरूप में आकर करते रहते हैं। अतः उनके मुखारविन्द से निकले हुए शब्द सदा सत्य, सारगर्भित होते हैं और उनकी वाणी कभी अकारथ नहीं जाती है। इस तथ्य को हाँसी के एक श्रद्धालु सत्संगी सेठ अर्जुनदास द्वारा भेजी गई सतगुरु कपा की निम्नलिखित घटना भी सिद्ध करती है।

"मेरा भतीजा नीरज पुत्र श्री बलवन्त राय अपनी परेशानियों से तंग आकर 12.02.03 को अपनी जीवन लीला समाप्त करने के इरादे से एक ऐसे स्थान के लिए, जहाँ उसको कोई पहचान भी न पाए, चुपचाप घर से निकल गया और घर से बहुत दूर मुम्बई पहुँच गया। लेकिन सत्संग के प्रभावस्वरूप उसने आत्महत्या जैसा घणित पाप न करने

का फैसला किया। इधर सारा परिवार उसको ढूंढने के लिए सात दिन तक मारा-2 फिरता रहा। अंततः जब सब प्रयास विफल हो गये तो थक कर हम आठवें दिन दिनोद धाम पहुँचे और रोते-रोते इस बारे में हुजूर महाराज जी से प्रार्थना की। दयाल स्वरूप ने आशीर्वाद के साथ आश्वासन दिया कि फिक्र मत करो नीरज जल्दी ही घर आ जाएगा।

मुम्बई में उसी रात नीरज को स्वप्न में महाराज जी के दर्शन हुए और महाराज जी ने उसको वापस घर पर आ जाने के लिए डाँटा। सो अगले ही दिन 20 तारीख को वह हाँसी के लिए चल पड़ा। 21 तारीख को दिल्ली पहुँचते ही उसने सारी घटना-क्रम पर पश्चात्ताप कर माफी मांगने के लिए हुजूर महाराज जी को फोन किया। महाराज जी ने नीरज को सुबह तक जीन्द पहुँचने को कहा। 22 फरवरी 2003 को जीन्द का सत्संग था। हुजूर महाराज जी ने हमें भी जीन्द सत्संग में बुला लिया तथा वहीं सत्संग से पहले नीरज को हमें सौंप दिया। इस प्रकार हुजूर जी ने हमारे परिवार को एक बहुत बड़े दुख से बचा लिया। निस्संदेह हम जैसे तुच्छ जीवों पर हुजूर महाराज जी की अपार दया मेहर है और वे हमारी पल-2 सम्भाल करते हैं।"

अर्जुनदास
बड़सी गेट, हांसी,
जिला हिसार

नोट :-जिस किसी सत्संगी भाई के साथ इस प्रकार सतगुरु दया की घटना घटी हो तो प्रमाण सहित दिनोद धाम में भाई बलबीर सिंह को दे सकते हैं।

कहानी

बुद्धिमान बंजारा

एक बंजारा था। वह बैलों पर मुल्तानी मिट्टी लादकर दिल्ली की तरफ आ रहा था। रास्ते में बहुत सी मिट्टी बिक गई। बैलों की पीठ पर लदे बौरे आधे तो खाली हो गये और आधे भरे। अब पीठ पर टिकें कैसे? बंजारे ने नौकरो से कहा कि बोरों के एक तरफ बालू (रेत) भर लो। यह राजस्थान की जमीन है, रेत बहुत है। नौकरों ने वैसा ही किया। बैलों की पीठ पर एक तरफ आधे बोरों में मुल्तानी और दूसरी तरफ बोरों में रेत हो गई।

दिल्ली से एक सज्जन उधर आ रहे थे, वे बोले, बोरों में एक तरफ रेत क्यों भरी है? नौकरों ने कहा-सन्तुलन करने के लिये। वह बोला-बैलों पर मुफ्त में ही भार ढोकर उनको मार रहे हो। मुल्तानी मिट्टी के आधे-आधे दो बोरों को एक ही जगह बाँध दो तो कम-से-कम आधे बैल तो बिना भार के चलेंगे। नौकरों ने कहा कि आपकी बात तो ठीक जँचती है, पर हम वही करेंगे, जो हमारा मालिक कहेगा। आप जाकर हमारे मालिक से बात कहो। वह मालिक (बंजारे) से मिला और वही बात कही। बंजारे ने पूछा कि आप कहाँ के हैं? कहाँ जा रहे है? उसने कहा कि मैं भिवानी का रहने वाला हूँ। रुपये कमाने के लिए दिल्ली गया था। कुछ दिन वहाँ रहा, फिर बीमार हो गया। जो थोड़े रुपये कमाये थे, वे खर्च हो गये। व्यापार में घाटा हो गया तो विचार किया कि घर चलना चाहिए। उनकी बात सुनकर बंजारा नौकरों से बोला कि इसकी सम्मति मत लो। अपने जैसे चलते हैं, वैसे ही चलो। इसकी बुद्धि तो अच्छी दिखती है, पर उसका नतीजा तो ठीक नहीं निकलता। अगर ठीक

निकलता तो ये धनवान हो जाते। हमारी बुद्धि भले ही ठीक न दिखे, पर उसका नतीजा ठीक होता है।

बंजारा दिल्ली पहुँचा। उसने रेत और मुल्तानी मिट्टी का ढेर अलग-अलग लगा दिया। मिट्टी बिकनी शुरू हो गई। उधर दिल्ली का बादशाह बीमार हो गया। वैद्य ने सलाह दी कि अगर बादशाह राजस्थान के रेत के टीले पर रहे तो उसका शरीर ठीक हो सकता है। रेत में शरीर को निरोग करने की शक्ति होती हैं। अतः बादशाह को राजस्थान भेजो।

वजीर ने कहा-राजस्थान क्यों भेजें? वहाँ की रेत यहीं मंगा लो। अरे! दिल्ली का बाजार है, यहाँ सब कुछ मिलता है। मैंने एक जगह रेत का ढेर लगा देखा है।

बादशाह के आदमी बंजारे के पास गये और उससे पूछा-रेत क्या भाव है? उसने कहा-चाहे रेत खरीदो, चाहे मुल्तानी मिट्टी। एक ही भाव है। दोनों बैलों पर बराबर तुलकर आये हैं। बादशाह के आदमियों ने सारी रेत खरीद ली। अगर बंजारा उस सज्जन की बात मानता तो ये मुफ्त के रुपये कैसे मिलते? इससे सिद्ध हुआ कि बंजारे की बुद्धि ठीक काम करती थी।

इस कहानी से यह शिक्षा लेनी चाहिए कि जिन्होंने अपनी वास्तविक उन्नति कर ली है, जिन्होंने अपने दुःख, सन्ताप, अशान्ति आदि को मिटा दिया है, ऐसे सन्त-महात्माओं की बात मान लेनी चाहिए, क्योंकि उनकी बुद्धि का नतीजा अच्छा हुआ है। उनकी बात समझ में न आए तो भी मान लेनी चाहिए। हमने आज तक अपनी समझ से काम किया तो कितना लाभ लिया है? अपनी बुद्धि से अब तक हमने कितनी उन्नति की है।

।। राधास्वामी।।

राधास्वामी सत्संग दिनोद-भिवानी द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की सूचि

क्र.	पुस्तक	लेखक
1	अरमान सागर	सन्त रामसिंह जी अरमान
2	अनुभव प्रकाश	परम सन्त ताराचन्द जी महाराज
3	दस अवतारों की कथा	महर्षि शिवव्रतलाल जी वर्मन
4	संकट मोचन रामायण	सन्त मास्टर राम सिंह जी अरमान
5	सतगुरु प्रेम	मा. कंवर सिंह जी महाराज
6	राधास्वामी योग भाग 1-6	महर्षि शिवव्रतलाल जी वर्मन
7	कबीर बीजक भाग 1-3	महर्षि शिवव्रतलाल जी वर्मन
8	नानक योग भाग 1-3	महर्षि शिवव्रतलाल जी वर्मन
9	पांच नाम की व्याख्या	पं. फकीर चन्द जी महाराज
10	राधास्वामी नाम निजनाम व सदा की मुक्ति	मा. कंवर सिंह जी महाराज
11	नित नेम गुटका	राधास्वामी सत्संग (दिनोद) भिवानी
12	चाचा साहब की डायरी	चाचा साधुराम जी
13	जूई से जहान्	मा. कंवर सिंह जी महाराज
14	अद्भुत उपासना योग भाग 1-2	महर्षि शिवव्रतलाल जी वर्मन
15	सप्तऋषि वतान्त	महर्षि शिवव्रत लाल जी वर्मन
16	सतगुरु महिमा	परम सन्त ताराचन्द जी महाराज
17	राधास्वामी मत प्रकाश	महर्षि शिवव्रतलाल जी वर्मन
18	पंथ संदेश	महर्षि शिवव्रतलाल जी वर्मन
19	कर्म रहस्य	महर्षि शिवव्रतलाल जी वर्मन
20	व्यवहार ज्ञान प्रकाश	महर्षि शिवव्रतलाल जी वर्मन
21	कबीर परिचय आद्यज्ञान	महर्षि शिवव्रतलाल जी वर्मन
22	कबीर योग भाग-1-13	महर्षि शिवव्रतलाल जी वर्मन
23	शरणागति योग	मह. शिवव्रतलालजी/सन्त फकीरचन्दजी
24	विचारांजलि	मह. शिवव्रतलालजी/सन्त फकीरचन्दजी
25	वसीयत नामा	परम सन्त मा. रामसिंह जी अरमान
26	प्रवचन संग्रह	मा. कंवर सिंह जी महाराज
27	सारवचन वार्तिक	स्वामी जी महाराज
28	सार वचन छन्छ-बन्द (पहला + दूसरा भाग)	स्वामी जी महाराज
29	अनमोल चरित्र	राधास्वामी सत्संग (दिनोद), भिवानी
30	अरमान सागर भाग-2	सन्त रामसिंह जी अरमान
31	सत्संग के आठ वचन	महर्षि शिवव्रतलाल जी वर्मन